Vol. 11, Issue-1 (January 2022) pp.176-182 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & Indexed in EBSCO International Database of Journals

गुरमत संगीत की गायन प्रस्तुति में आये बदलाव : एक विश्लेषण

करनजीत सिंह
पीएच.डी. शोधार्थी
संगीत एवं ललित कला संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Email: karanrubal@yahoo.com

सारांश

भारतीय धर्मों के प्रचार और प्रसार में संगीत का विशेष महत्व है, इसलिए धार्मिक परम्पराओं का संगीत के विकास में काफी योगदान रहा है.गुरु नानक देव जी ने भी गुरबानी के प्रचार और प्रसार के लिए 'शब्द कीर्तन' की शैली को जन्म दिया, इस परंपरा को 'गुरमत संगीत' का नाम दिया.गुरमत संगीत हिंदुस्तानी संगीत का अटूट अंग है. यह ग्रंथ अब तक का एकमात्र ऐसा धार्मिक ग्रंथ है जो लगभग पूर्ण रूप से रागबद्ध है. गुरमत संगीत की गायन परंपरा में वारें, अलाहुनियाँ, सिठुनियाँ, पढ़तालें आदि गायन शैलियां हैं, परन्तु कालांतर में इन शैलियों का गायन कुछ खास अवसरों पर ही सुनने को मिलता है.इसका कारण गुरमत संगीत की पूर्ण जानकारी ना होना है. प्रस्तुत शोध पत्र में पिछले कुछ दशकों में गुरमत संगीत की प्रस्तुति में आये बदलावों और गुरमत संगीत का प्रचार और प्रसार कम होने के कारणों को दृष्टिपात किया गया है.

मुख्य बिंदु- खसम की वाणी, कीर्तन चौंकी, सारंदा, टकसाल, राग निर्णायक कमेटी

भारत में धर्म का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, जिस कारण हर भारतीय परम्परा किसी न किसी तरह से धर्म के साथ जुडी हुई है, इन परंपराओं का उद्देश्य सत्य मार्ग दिखाकर मनुष्य की आध्यात्मिक और सांसारिक उन्नति करना है.डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार "जिन सिद्धांतों के अनुसार हम अपना दैनिक जीवन व्यतीत करते हैं एवं जिनके द्वारा हमारे सामाजिक संबंधों की स्थापना होती है, वही धर्म है."[1] धर्म की परिभाषा करते समय हमारे मन में मंदिर, गुरुद्वारा, मस्जिद और कई धार्मिक स्थानों का विचार आता है पर यह सब धर्म को समझने के विभिन्न मार्ग हैं. धर्म एक विश्वास, भावना और आभास का नाम है. प्राचीन संस्कृतियों में भी धर्म और संगीत में गहरा संबंध मिलता रहा है. भारतीय संगीत का जन्म सामवेद ग्रंथ में लिखित ऋचाओं से हुआ माना जाता है.धर्म प्रचारकों ने भी इसी लहर को अपनाया.सिखों के पहले गुरु, गुरु नानक देव जी ने यात्राओं के दौरान विभिन्न संस्कृतियों को देखा और तत्पश्चात कीर्तन परम्परा को जन्म दिया.गुरु नानक देव जी अपनी वाणी को 'खसम की वाणी' कहते थे और खुद को शायर के रूप में प्रस्तुत करते थे.गुरमत संगीत की स्थापना करके गुरु नानक देव जी ने मानव कल्याण और आत्मिक उथान को एक नया विकल्प बनाया.गुरमत संगीत का मुख्य स्रोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब है.

---

[1] यमन, अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, पृ.सं.-662

इस परंपरा को गुरमत संगीत का नाम दिया. गुरमत संगीत को पहले गुरबाणी संगीत के नाम से भी जाना जाता रहा है, परन्तु पिछले कुछ दशकों से गुरमत संगीत ही ज़्यादा प्रचार में है.गुरमत संगीत, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की ही शाखा है एवं अटूट अंग है. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के रचित पदों में गुरु नानक देव जी से लेकर परवर्ती पाँच गुरुओं की वाणी के साथ साथ भट्टों की, भक्तों की और गुरसिखों आदि की वाणी दर्ज है.इसमें रचित ज्यादातर वाणी में रागबद्ध हैं. जिस कारण श्री गुरु ग्रंथ साहिब विश्व में एक मात्र रागबद्ध धार्मिक ग्रंथ हैं.

गुरु नानक देव जी ने गुरमत संगीत की विशाल परंपरा के संस्थापक होते हुए मध्यकालीन समय में प्रचलित राग रागनी वर्गीकरण को छोड़ कर सिर्फ रागों का ही प्रयोग किया[2], गुरु ग्रन्थ साहिब में कही भी रागनी शब्द का प्रयोग नहीं मिलता.उन्होंने शुद्ध, छायालग और संकीर्ण रागों के अंतर्गत बानी की रचना की[3] और गुरमत संगीत को नई दिशा प्रदान की.

सिर्फ गुरु नानक ही नहीं बल्कि परवर्ती सभी गुरुओं का भी संगीत के साथ गहरा लगाव था.गुरु अर्जन देव जी द्वारा स्वनिर्मित वाद्य सारंदा, जिसका वादन वो खुद बहुत अच्छे से करते थे.इसी तरह गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा स्वनिर्मित दिलरुबा वाद्य को वह बहुत अच्छे से बजाते थे.इसी तरह से सभी सिख गुरुओं द्वारा गुरमत संगीत के प्रचार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया.गुरु काल के बाद उनके द्वारा रचित पूर्ण वाणी का संकलन कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की रचना की गयी.कालांतर में गुरमत संगीत सुनने को भी मिल रहा है और गुरमत संगीत शिक्षण केंद्रों में सिखाया भी जा रहा है.पर क्या यह उसी ढंग से किया जा रहा है जिस सोच के साथ सिख गुरुओं द्वारा इस विशाल स्वतंत्र गायन शैली की रचना की गयी थी, यह विषय चर्चा के योग्य है.

गुरमत संगीत में शुरू से 15 कीर्तन चौकियाँ गाने की मर्यादा चली आ रही है, जिसमें 8 रागियों (गायक वर्ग) की और 7 रबाबियों की होती थी[4].कीर्तन चौंकी की मर्यादा में पहले लहरे के साथ तबला बजता, जिसे 'शान' भी कहा जाता है.फिर मंगला चरण गाया जाता जोकि विलम्बित लय में गाये जाने वाले राग से सम्बंधित होता.उसके बाद शब्द गायन आरंम्भ किया जाता.मंगलाचरण का गायन खुले बोलों की तालों में किया जाता.मंगलाचरण में इन पदों को प्रयोग किया जाता जो कि कालांतर में भी किया जा रहा है.

डंडौत बंदन अनक बार सर्ब कला समरथ
डोलन ते राखो प्रभु नानक दे कर हथ।[5]

15-20 मिन्ट मंगला चरण गाने के बाद तिहाई के साथ उसे संपन्न किया जाता है. तत्पश्चात शब्द गायन आरम्भ होता है. शब्द के स्थान पर ध्रुपद गायन की परंपरा भी प्रचार में रही है.नामधारी संस्था में आज भी मंगलाचरण के बाद ध्रुपद गाया जाता है.शब्द गायन में भी खुले बोलों की तालों का प्रयोग होता.शब्द गायन करते हुए बोल अलाप, गुरबाणी प्रमाण, बोल तान का प्रयोग होता.इसके बाद उसी राग में दूसरे शब्द का आरम्भ होता है, जिसे तीनताल में गाया जाता है. तीसरे शब्द के लिए दीपचंदी, कहरवा या दादरा ताल में और आखिर में कीर्तन

---

[2] पदम्, वरिंदर कौर. *गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान*, पृ.सं.-102

[3] सिंह, गुरनाम. गुरमत संगीत:एक अदुत्ति परंपरा, गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ-भाग-2, पृ.सं.-16

[4] सिंह, करतार. कीर्तन परंपरा, गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ-भाग-2, पृ.सं.-62

[5] गुरु अर्जन देव जी, आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, पृ.सं.-256

चौंकी के साथ समापन किया जाता.इन सभी शब्दों का रागबद्ध होना अनिवार्य था, परन्तु गुरमत संगीत में हमेशा गुरबाणी को प्रमुख रखा गया है, जो आज भी प्रचार में है.कालांतर में गुरमत संगीत की परंपरा कम प्रचार में देखने को मिल रही है.जिसका मुख्य कारण गुरमत संगीत में पिछले कुछ दशकों से आये बदलाव है।

जैसे के ज्यादातर रागी (गायक वर्ग) शिवरंजनी, भैरवी और पहाड़ी रागों तक ही सीमित हो चुके हैं और तालों की बात करें तो कहरवा, दादरा के अतिरिक्त किसी और ताल में गाना उचित नहीं समझते.फ़िल्मी गानों या लोक धुनों के ऊपर शब्द गायन का प्रचार बढ़ रहा है.गुरबाणी की रचना ही रागों को आधार मान कर की गयी है, अगर इन रागों का ही हम त्याग कर देंगे तो गुरुओं द्वारा रची उस बानी का आभास हम नहीं ले पाएंगे.कम से कम एक शब्द तो शास्त्रीय संगीत में होना चाहिए, गायक वर्ग ही श्रोता को तैयार करता है, जैसा गायन गायक लोगों के आगे रखेगा, वैसी ही प्रशंसा प्राप्त करेगा.गुरमत संगीत की परंपरा को जीवित रखने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधकी कमेटी, अमृतसर की कुछ मुख्य हिदायतें इस प्रकार हैं[6]-

1. श्री हरिमंदिर साहिब में फ़िल्मी गानों के ऊपर शब्द गायन नहीं किया जायेगा.
2. युगल गायन की तरह एक रागी तार सप्तक में और दूसरा मध्य सप्तक में शब्द गायन न करे.
3. पुरातन रीतों को पहल दी जाए, एक ही प्रकरण के शब्द पढ़े जाएँ.
4. शब्द गायन राग निर्णायक कमेटी द्वारा निश्चित रागों में ही किया जाए.
5. कीर्तन करते समय सरगम और तान को छोड़कर बोलतान और बोलालाप का प्रयोग किया जाए.
6. शब्द गायन सिर्फ शास्त्रीय संगीत की तालों में ही किया जाए.
7. शब्द में 'रहाओ' वाले पद को ही शब्द की स्थाई के रूप में प्रयोग किया जाए.
8. एक शब्द का गायन समय 12-14 मिन्ट होना चाहिए.

इन सभी हिदायतों का अनुसरण कम ही देखने को मिलता है.धुन प्रधान कीर्तन का प्रचार बढ़ता हुआ दिख रहा है.गुरमत संगीत का परंपरागत कीर्तन तो बहुत दूर की बात है कहीं पर उसका अनुसरण होता भी नहीं दिख रहा.मंगलाचरण करने के लिए पाश्चात्य कहरवा का ठेका लगाकर गाया जा रहा है.गुरबाणी के प्रमाणों के स्थान पर आलाप किये जा रहे हैं.

तंत्र वाद्यों का प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता है.हरिमंदिर साहिब अमृतसर में तंत्र वाद्यों को सुनने का अवसर मिलता रहता है.

नामधारी परंपरा में तंत्री वाद्यों का प्रचार आज भी है.कालांतर में जो संस्थाएं इस तरह का गायन करने वाले रागियों का प्रचार कर रही हैं उन पर भी नकेल कसा जाना चाहिए.ज्यादातर रागी शब्दों का कैसेट तैयार करके उनका मीडिया चैनल्स के जरिये प्रचार करते हैं, जिससे उनका अपना पेट तो भर रहा है पर श्रोता गुरमत संगीत की परंपरा से वंचित होता जा रहा है.एक निर्णायक कमेटी का निर्माण किया जाना चाहिए जिसके अंतर्गत कैसेट करवाने से पहले सभी रागियों को निर्णायक कमेटी प्रमाणिकता दे.

[6] नरूला, डी.एस. कीर्तन दा स्वरूप अते भविख, गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रन्थ-भाग-2, पृ.सं.-167

शिक्षण केंद्रों में गुरमत संगीत:

गुरमत संगीत के विकास को लेकर शिक्षण केंद्रों में भी प्रयास देखने को मिले हैं.गुरमत संगीत की परंपरा को संभाल कर रखने और इस परंपरा को घर घर पहुँचाने के लिए पिछले कुछ दशकों से कार्यरत है.जिसमें विभिन्न टकसालों ने सीना-ब-सीना आने वाले पीढ़ी को सिखाया है.इन टकसालों में बुढ्ढा जोड़ टकसाल, हरगना टकसाल, यतीमखाना टकसाल, शहीद सिख मिशनरी कॉलेज, गुरमत विद्यालय गुरुद्वारा रकाब गंज आदि टकसालों के नाम सामने आते हैं.

जवद्दी कलां टकसाल: जवद्दी कलां टकसाल संस्था के योगदान की चर्चा नहीं की जाए तो यह विषय अपूर्ण रह जायेगा.यह टकसाल भाई जावंदा जी के नाम के ऊपर बसा हुआ है.जिसके पूर्व मुखी संत बाबा सुच्चा सिंह जी थे, जिनके निरंतर प्रयासों से लगातार 1991 से गुरमत संगीत सम्मेलन की परंपरा निरंतर आजतक चली आ रही है.इस सम्मेलन को हर वर्ष विषय प्रमुख रखकर करवाया जाता रहा है, जिससे श्रोताओं को गुरमत संगीत परंपरा के विभिन्न रंग देखने को मिलते हैं.1992 के सम्मलेन का विषय मिश्रत और लोक धुनें था.1993 में गुरु ग्रन्थ साहिब के सभी बाणिकारों के रचित पदों का राग निबद्ध गायन था.1994 में यह सम्मलेन दिल्ली में गुरुद्वारा बांग्ला साहिब में करवाया गया.1996 में यह गुरमत सम्मेलन नादेड में श्री हजूर साहिब में करवाया गया.1997 से अबतक यह सम्मेलन लुधिआना में ही हो रहा है.

दूसरा मुख्य कारण जो इस टकसाल को प्रमुख बनाये हुए है कि गुरमत संगीत की कीर्तन परंपरा और रागबद्धता को बचाये रखने के प्रयास जो बाबा सुच्चा सिंह जी द्वारा किये गए हैं वह अतुलनीय और सराहनीय हैं. उन्होंने राग निर्णायक कमेटी का निर्माण किया जिसका उद्देश्य गुरमत संगीत के रागों के स्वरूप निश्चित करना था, इस कमेटी की अध्यक्षता पंडित दलीप चंद्र बेदी जी ने की.यह कुल 12 सदस्यों की राग निर्णायक कमेटी थी[7].जिन्होंने 31 रागों के स्वरूप निश्चित करके और 31 ही इन रागों के प्रकारों को निश्चित किया.कालांतर में यह रागों के स्वरूप ही गुरमत संगीत में प्रचार में हैं.इसके अतिरिक्त शोध कार्यों के प्रोत्साहन के लिए "विसमाद नाद" पत्रिका का प्रकाशन शुरू करवाया.1991 में बच्चों को गुरमत संगीत की शिक्षा देने के लिए गुरमत संगीत अकैडमी की स्थापना की.1997 में 16 ऑडियो कैसेट 31 रागों में रिकॉर्ड करके प्रकाशित किये गए.2001 और 2002 के संगीतक सम्मेलनों में युवा कलाकारों से गुरमत संगीत के अंतर्गत कीर्तन करवाया गया.2002 में संत बाबा सुच्चा सिंह जी के देहांत के बाद आज भी संत बाबा अमीर सिंह जी गुरमत संगीत की सेवा निभा रहे है.

गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में 1997 में गुरमत संगीत विभाग स्थापित किया गया.इस विभाग की स्थापना में पूर्व वाईस चांसलर डॉ. गुरदीप सिंह रंधावा और डॉ. गुरनाम सिंह के नाम उल्लेखनीय हैं.विभाग स्थापना के बाद बी.ए, एम.ए के कोर्स में गुरमत संगीत का इतिहास और साइंटिफिक स्टडी ऑफ़ गुरमत संगीत के पर्चों को पढ़ाना अनिवार्य किया गया.[8] संगीत विभाग की तरफ से करवाई गयी 1992 की "गुरमत संगीत टीचिंग वर्कशॉप" में संगीत अध्यापकों, विद्वानों और गुरमत संगीत प्रेमियों ने योगदान दिया.इसी तरह से गुरमत संगीत के विकास के लिए संगीत विद्यालय भी अपना योगदान कर रहे हैं.

---

[7] पदम्, वरिंदर कौर. गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, पृ.सं.-110

[8] वही, पृ.सं.-111

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटिआला में 2005 में गुरमत विभाग की स्थापना की गयी.विभाग स्थापित होने से पूर्व भी पंजाबी विशवविद्यालय गुरमत संगीत के लिए कार्यरत रहा है.पंजाबी भाषा विकास विभाग पटिआला की तरफ से 1990 में "गुरमत संगीत विभिन्न् परिपक्ष" सेमीनार और गुरमत संगीत सम्मेलन का आयोजन किया गया.जिसमें सिंह बंधू, डॉ.अजीत सिंह पैंतल, डॉ.जागीर सिंह और डॉ. गुरनाम सिंह आदि ने निर्धारित रागों में गायन किया और गुरमत संगीत की शैली को आगे बढ़ाया.इसके बाद 1997 में डिप्लोमा इन गुरमत संगीत शुरू करवाया गया.कालांतर में इस विभाग में डिप्लोमा कोर्स के अतिरिक्त बी.ए, ऍम.ए और पीएचडी तक के कोर्स करवाए जा रहे हैं.गुरमत संगीत के ऊपर कई किताबें भी लिखी गयी हैं जो पंजाबी विशवविद्यालय के पब्लिकेशन ब्यूरो से प्रकाशित की गयी हैं और आज भी कर रहे हैं.इस तरह से पंजाबी विशविद्यालय का गुरमत संगीत के प्रचार प्रसार में अहम योगदान है.

शिक्षण केंद्रों के द्वारा गुरमत संगीत के लिए इस पहल को सराहना चाहिए पर इन संस्थानों में गुरमत संगीत सिखाया किस तरह से जा रहा है यह विषय चर्चा के योग्य है.विद्यालयों में जो गुरमत संगीत की संगीत प्रतियोगिताएं करवाई जा रही है वह बहुत ही सफल प्रयास है.परन्तु इन प्रतियोगिताओं में ज्यादातर शब्द गायन सिर्फ पड़तालों का ही होता है.गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु रामदास और गुरु अर्जन देव ने 12 रागों के अंतर्गत 55 पड़तालों की रचना की[9].यह पडतालें राग आसा, सूही, बिलावल, रामकली, नट नारायण, भैरव, सारंग, मल्हार, कानड़ा और प्रभाती रागों में रागबद्ध हैं[10].लेकिन इन प्रतियोगिताओं में पड़ताल गायन की अलग ही तस्वीर देखने को मिलती है.

पड़ताल से अभिप्राय ताल के परिवर्तन से है, वह शैली जिसमें एक शब्द का गायन अलग अलग तालों में किया जाए.परंपरा के अनुसार सबसे पहले मंगलाचरण का गायन किया जाता है जिसमें ज्यादातर एक ही तिहाई सुनने को मिलती है.जिसके बाद पड़ताल का गायन भी परंपरा अनुसार विभिन्न तालों में किया जाता है परन्तु पड़ताल का जिस तरह से गायन किया जाता है उसमें ताल पक्ष ही ज्यादा उभर कर सामने आता है.जिस वजह से श्रोता गुरबाणी के भाव पक्ष से वंचित हो जाता है.गुरमत संगीत शब्द प्रतियोगिताओं में जरूरी नहीं पड़ताल शैली का ही गायन किया जाए.हम एकताल या किसी अन्य शास्त्रीय ताल में भी पूर्ण शब्द पढ़ सकते हैं.शब्द का रागबद्ध होना अनिवार्य है परन्तु शब्दों पर राग हावी नहीं होना चाहिए.शब्द को साफ़ साफ़ लहजे में गाया जाना चाहिए ताकि श्रोता गुरबाणी के भाव को समझ सके जिसमें बोललाप, बोलतान के साथ गुरबाणी प्रमाणों का प्रयोग करें और गुरबाणी को मुख्य रख कर गायन करें.वह भी एक अच्छी गुरबाणी संगीत की प्रस्तुति होगी.

गुरमत संगीत के लिए किये गए मुख्य प्रयास:

पिछले कुछ दशकों में गुरमत संगीत के विकास और प्रसार के लिए किये गए कुछ मुख्य कार्य निम्नलिखित इस प्रकार हैं :–

---

[9] वही, पृ.सं.-120

[10] कौर, अमृतपाल. पड़ताल गायन शैली, गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ भाग-दो, पृ.सं.-34

1. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की तरफ से गुरमत संगीत को लेकर सफल प्रयास किया गया है.ग्यारवीं और बारवीं कक्षा तक गुरबाणी संगीत को विषय के रूप में स्थापित किया गया है.इस कार्य के लिए पूर्व अध्यक्ष गुरबक्श सिंह शेरगिल और डॉ जागीर सिंह बधाई के पात्र हैं.
2. गुरमत संगीत सोसाइटी, पटियाला की स्थापना स्व. प्रो. तारा सिंह जी ने की.जिसके अंतर्गत उन्होंने गुरमत संगीत को घर घर तक पहुँचाने के लिए घरों में निशुल्क कीर्तन परंपरा की प्रथा शुरू की.जिसमें उनके विद्यार्थियों में प्रो. गुरनाम सिंह आदि ने उनका साथ दिया.प्रो तारा सिंह जी द्वारा रचित किताबें है :- गुरु अंगद देव राग रत्नावली , गुरु रामदास राग रत्नावली, गुरु अर्जन देव राग रत्नावली, गुरु गोबिंद सिंह राग रत्नावली, भगत राग रत्नावली और पड़ताल गायकी[11].इन किताबों में उन्होंने अंकित रागों में शब्दों को लिपिबद्ध किया है .उनके द्वारा किया गया यह अमूल्य कार्य कालांतर गुरमत संगीत के विद्यार्थियों के लिए किसी ख़ज़ाने से कम नहीं है।
3. गुरु गोबिंद सिंह स्टडी सर्किल पिछले करीब 30-35 वर्षों से गुरमत संगीत की विरासत को सँभालने के लिए कार्यरत है.जिसके अंतर्गत भाई मरदाना यादगारी संगीतक प्रतियोगिता हर वर्ष करवाया जाता है.इसी संस्था की पंजाब एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी यूनिट की तरफ से हर वर्ष डॉ. दीप मेमोरियल शब्द गायन प्रतियोगिता करवाई जाती है.
4. गुरमत संगीत की कुछ मुख्य किताबें :- संत स्वर्ण सिंह गंधर्व कृत सुर सिमरन संगीत(5 भाग), भाई अवतार सिंह गुरचरण सिंह कृत गुरबाणी संगीत प्राचीन रीत रत्नावली , प्रिं.दयाल सिंह कृत गुरमत संगीत सागर, डॉ.गुरनाम सिंह द्वारा रचित सिख म्युज़िकोलोजी .
5. मीडिया चैनल्स की तरफ से पिछले कुछ सालों से रियलिटी शोज करवाए जा रहे हैं.जिसमें बच्चों को गुरमत संगीत की परंपरा के साथ जोड़ने के लिए प्रयास किये गए जैसे पीटीसी चैनल द्वारा प्रसारित 'गावो सच्ची बानी' शो.

निष्कर्ष:

अतः उपरोक्त अध्धयन और विश्लेषण के आधार पर कह सकते है कि भविष्य में गुरमत संगीत की इस विशाल परम्परा का पुर्नजन्म होगा. समय समय पर गुरमत संगीत के कीर्तन दरबार होंगे, जिनमें गुरमत संगीत की परम्परा के अंतर्गत सभी शैलियों का गायन होगा, जिससे गुरमत संगीत के प्रशंसकों में वृद्धि होगी. गुरमत संगीत में प्रयोग होने वाले तंत्री वाद्यों को बल मिलेगा.इन वाद्यों को सीखने के लिए नए विद्यार्थी पैदा होंगे.सिख गुरुओं द्वारा इस परम्परा को खड़ा करने के लिए किये गए प्रयासों से विश्व परिचित होगा .विश्वविद्यालयों में गुरमत संगीत के प्रति नज़रिया बदलेगा .इस तरह से गुरमत संगीत गायन से कला की संतुष्टि के साथ साथ ईश्वर सुख की प्राप्ति का अवसर भी पर्याप्त होता है.

[11] पदम्, वरिंदर कौर गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, पृ.सं.-108

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कौर, अमृतपाल. पड़ताल गायन शैली, *गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ,* भाग-दो, पंजाब: स्वामी प्रिंटर्स हैबोवाल कलन, लुधियाना
2. गिल, गुरप्रताप सिंह. गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतक तत. पब्लिकेशन ब्यूरो. पंजाब:पटियाला, 2001.
3. नरूला, डी.एस. कीर्तन दा स्वरूप अते भविख, *गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ,* भाग-दो, पंजाब: स्वामी प्रिंटर्स हैबोवाल कलन, लुधियाना
4. पदम्, वरिंदर कौर. गुरमत संगीत दा संगीत विज्ञान, अमरजीत सहित प्रकाशन. पंजाब:पटियाला,2005.
5. यमन, अशोक कुमार. संगीतरत्नावली. चंडीगढ़. अभिषेक पब्लिकेशन्स, 2008.
6. सिंह, करतार. कीर्तन परंपरा. *गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ,* भाग-दो, पंजाब: स्वामी प्रिंटर्स हैबोवाल कलन, लुधियाना
7. सिंह, गुरनाम. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब राग रत्नाकर. धर्म प्रचारक कमेटी (एस.जी.पी.सी.).पंजाब:अमृतसर,2010.
8. सिंह, भाई चतर भाई जीवन. आदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब,सिंह पब्लिकेशन्स,पंजाब:अमृतसर,1998.
9. सिंह, भाई सुखवंत. गुरु नानक संगीत पद्धति ग्रंथ भाग- दूसरा. स्वामी प्रिंटर्ज. पंजाब: लुधियाना, 2006.

पत्रिकाएं

1. तारा सिंह, "गुरबाणी संगीत और भारतीय संगीत का तुलनात्मक अध्यन,"1,no.1(1991):23.